वर्ष ५, अंक - ९, फरवरी २०२५

# आओ बातें करें

मानव भारती स्कूल देहरादून की पहल

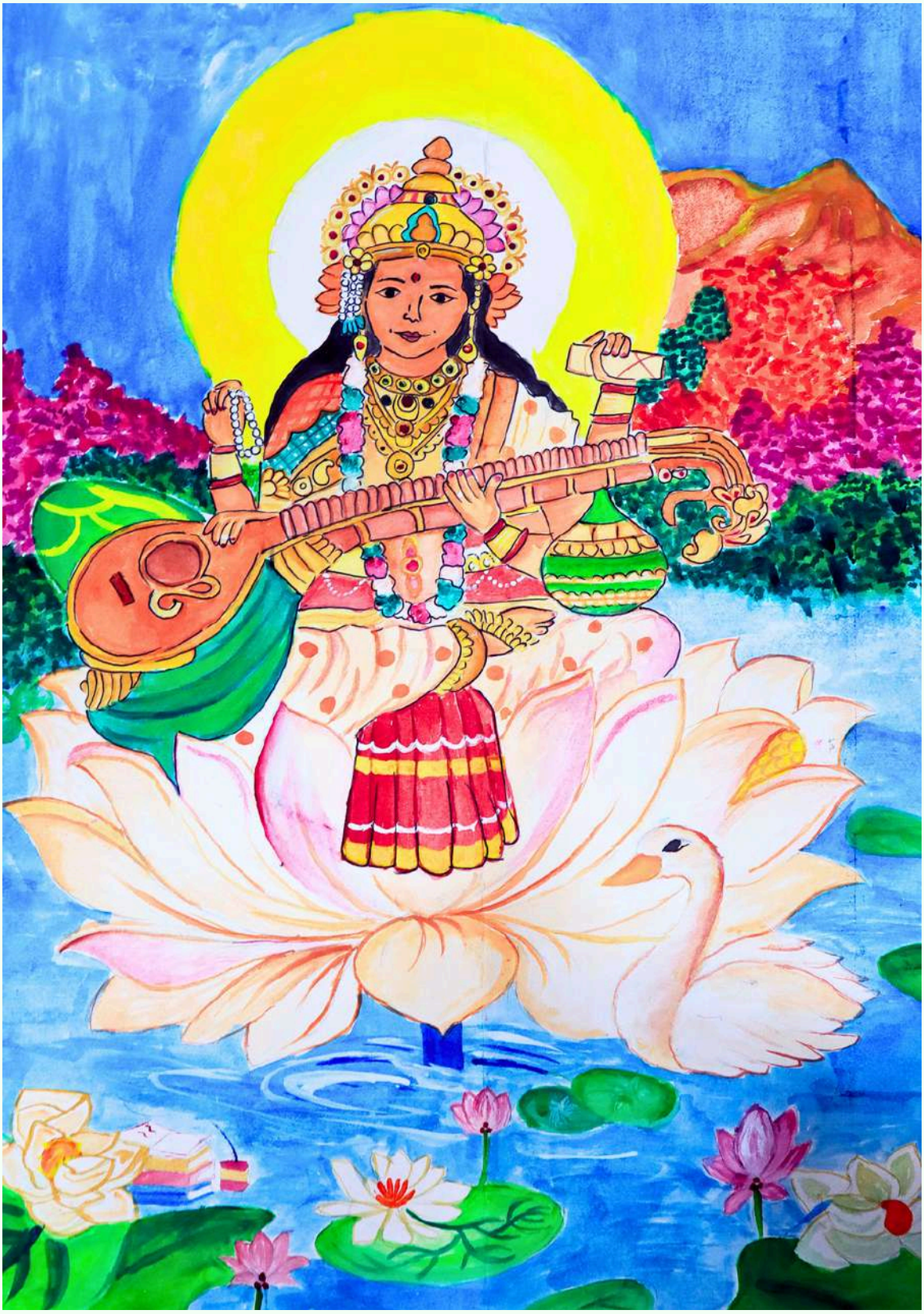

**- खुशी तिवारी**

# “ वसंत पंचमी ”

वसंत पंचमी हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण त्योहार है, जो वसंत ऋतु के आगमन का प्रतीक है। यह त्योहार माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाया जाता है, जो आमतौर पर जनवरी या फरवरी में पड़ता है। वसंत पंचमी का त्योहार देवी सरस्वती की पूजा अर्चना के लिए मनाया जाता है। मां सरस्वती ज्ञान, कला और संगीत की देवी हैं। इस दिन लोग देवी सरस्वती की पूजा करते हैं और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करते हैं।वसंत पंचमी के दिन लोग अपने घरों को साफ-सुथरा करते हैं और देवी सरस्वती की पूजा के लिए एक विशेष पूजा स्थल तैयार करते हैं। वे देवी सरस्वती की मूर्ति को स्थापित करते हैं और विधिवत उनकी पूजा करते हैं। पूजा के दौरान लोग देवी सरस्वती को फूल, फल और मिठाइयाँ चढ़ाते हैं ।इस दिन लोग पीले वस्त्र पहनते हैं तथा इस दिन मां सरस्वती को पीला भोग पर चढ़ाया जाता है जैसे पीली बूंदी, केसर हलवा राजभोग, मालपुआ आदि। इस दिन खिताबों और वाद्य यंत्रों की पूजा भी की जाती है तथा छोटे बच्चों को प्रथम अक्षर ज्ञान कराया जाता है ।वसंत पंचमी का त्योहार शिक्षा, कला और संगीत के क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरणा प्रदान करता है। यह त्योहार हमें ज्ञान, कला और संगीत के महत्व को समझने और इन क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है।

**- सृष्टि शर्मा, 7 (ब)**

# वसंत ऋतु का आगमन

वसंत की व्याख्या है, 'वसन्त्यस्मिन् सुखानि।' अर्थात् जिस ऋतु में प्राणियों को ही नहीं, अपितु वृक्ष, लता आदि को भी आनंदमय करने वाला मधुरम प्रकृति से प्राप्त होता है, उसको ' वसंत' कहते हैं। वसंत ऋतु को सभी ऋतुओं में सबसे सुंदर और सुखद ऋतु माना जाता है। यह फरवरी मार्च के महीने में आती है और सब मन में एक नई ताजगी का अनुभव करते हैं। इस समय न मौसम बहुत ठंडा होता है ना गरम जिससे हर किसी को राहत मिलती है। वसंत ऋतु में पेड़ों पर नए पत्ते उग जाते हैं और रंग-बिरंगे फूल खिल जाते हैं खेतों में सरसों के पीले फूल दूर-दूर तक फैले हुए दिखते हैं। जो धरती को एक सुनहरी चादर की तरह ढक देते हैं। वसंत ऋतु का हमारे जीवन में खास महत्व है। इस समय वसंत पंचमी का त्यौहार मनाया जाता है जिसमें लोग मां सरस्वती की पूजा करते हैं। किसान अपनी फसलों की अच्छी पैदावार देखकर खुश होते हैं। बच्चे इस मौसम में खेलने का आनंद लेते हैं क्योंकि मौसम अच्छा होता है। यह ऋतु न केवल हमारे शरीर को स्वस्थ रखती है, बल्कि हमारे मन को भी शांत और प्रसन्न बनाती है। वसंत ऋतु हमें सिखाती है कि हर कठिनाई के बाद जीवन में नई खुशियाँ और उमंगें आती हैं। यह जीवन की नई शुरुआत करने का समय है।

**- श्रेया सेनवाल, कक्षा -८, पंचशिला सदन**

# " भारत की ऋतुएँ "

भारत में मुख्यतः छह प्रकार की ऋतुएँ होती हैं। वसंत ऋतु, ग्रीष्म ऋतु, वर्षा ऋतु, शरद ऋतु, हेमंत ऋतु, शिशिर या शीत ऋतु। साल की शुरुआत में सबसे पहले वसंत ऋतु का आगमन होता है जो मुख्य तौर पर फरवरी से मार्च के महीनों के बीच आती है। इस ऋतु के आने पर सर्दी कम हो जाती है, मौसम सुहावना हो जाता है, पेड़ों में नए पत्ते आने लगते हैं । वसंत को ऋतुराज भी कहते हैं क्योंकि इस ऋतु में न अधिक सर्दी पड़ती है और न अधिक गर्मी। वसंत ऋतु के बाद आता है ग्रीष्म ऋतु, यानी गर्मी का मौसम। यह ऋतु मार्च में शुरू होती है व जून में समाप्त हो जाती है । इस मौसम में सूर्य उत्तर की ओर होता है। इस मौसम में दिन लंबे और रातें छोटी होती हैं ।

इस मौसम में भारत के उत्तर और उत्तर-पश्चिमी हिस्सों में दिन के समय बहुत ज़्यादा गर्म हवाएँ चलती हैं, जिन्हें 'लू' कहते हैं । इसके बाद आती है वर्षा ऋतु ,जो बारिश का मौसम होता है । भारत में वर्षा ऋतु आमतौर पर जुलाई से सितंबर तक होती है । वर्षा ऋतु को मॉनसून भी कहा जाता है । वर्षा ऋतु में मौसम ठंडा और आरामदायक रहता है । वर्षा ऋतु, गर्मी से राहत देने के साथ-साथ खेती के लिए भी फ़ायदेमंद होती है। शरद ऋतु, गर्मी और सर्दी के बीच का मौसम होता है । शरद ऋतु, आम तौर पर सितंबर, अक्टूबर, और नवंबर के महीनों में आती है । शरद ऋतु को फ़सल का मौसम भी कहा जाता है ।शरद ऋतु में दिन छोटे हो जाते हैं और हवा ठंडी हो जाती है। इसे पतझड़ भी कहते हैं । हेमन्त ऋतु शीतकाल में आने वाली एक ऋतु है। हेमंत ऋतु दिसंबर जनवरी के मौसम में आती है । हेमंत ऋतु में मौसम मध्यम ठंडा होता है। अंत में आती है शीत ऋतु जो कि दिसंबर से जनवरी के महीनों के बीच आती है । शीत ऋतु में दिन छोटे और रातें लंबी होती है। शीत ऋतु में पहाड़ी इलाकों में काफ़ी बर्फ़बारी होती है । इस प्रकार भारत में मुख्यतया यह 6 प्रकार की ऋतुएं होती हैं।

**- पलक्षा, आठ (अ)**

## छुट्टियों के दिन

छुट्टियों के वह दिन बड़े प्यारे थे,
गांव के कितने अच्छे नजारे थे ।
बड़ा प्यारा वह नजारा था,
ऐसा मन करता वहीं बस जाना था ।
बड़े रसीले होते आम ,
लीची भी खाते सुबह शाम ।
छुट्टियों के हो दिन बड़े प्यारे थे ,
गांव के कितने अच्छे नजारे थे ।
खुशी-खुशी से ननिहाल जाते,
याद थैलों में भरकर वापस लाते ।
चूल्हे की वह गरम-गरम रोटी ,
लगती थी वह बड़ी मोटी मोटी ।
छुट्टियों के दिन बड़े प्यारे थे,
गांव के कितने अच्छे नजारे थे ।

**- सोनाक्षी भट्ट, आठ (ब)**

# बच्चों की कलम से

## कोशिश

कोशिश को फल मिलेगा ,
आज नहीं तो कल मिलेगा ।
पौधे को पानी दो ,
बंजर जमीन से भी फल निकलेगा ।
बस थोड़ा सब्र करो ,
आज नहीं तो कल निकलेगा ।
सब्र रखना सीखो ,
ऐसा वक्त भी आएगा ।
जब सब पीछे रह जाएंगे ,
आखिरी में जाकर तुम्हें फल मिल जाएगा।

**- विदुर भट्ट, कक्षा 8**

## चिड़िया

चिड़िया रानी चिड़िया रानी ।
तुम हो पेड़ों की रानी ।।
सुबह सवेरे उठ जाती हो ।
ना जाने क्या गाती हो ।।
क्या तुम भी पढ़ने को जाती हो ।
या नौकरी करने को जाती हो ।।
शाम से पहले आती हो ।
बच्चों को दाना लाती हो ।।
भर भर चोंच खिलाती दाना ।
चूं चूं चहक सुनाती गाना ।।

**- दिव्यांशी रावत, कक्षा 3**

## हिंदी से हिंदुस्तान

क्यों केवल अंग्रेजी को मिलता है सम्मान,
क्यों केवल 14 सितंबर को होता हिंदी का सम्मान।
हिंदी से यह हिंद बना, हिंदी से हिंदुस्तान ।
हिंदी से हम प्यार करें तो ,
बढ़ जाए देश की शान।
हमने पढ़ा गणित और विज्ञान ,
पर कभी ना दिया हिंदी पर ध्यान ।
हिंदी से यह हिंद बना
हिंदी से हिंदुस्तान।

**- सच्ची शर्मा, आठ (ब)**

---

## " बेटी "

जब-जब जन्म लेती है बेटी, खुशियां साथ लाती है बेटी ।'
ईश्वर की सौगात ही बेटी, सुबह की पहली किरण है बेटी।
तारों की शीतल छाया है बेटी, आंगन की चिड़िया है बेटी।
त्याग और समर्पण सिखाती है बेटी, नये-नये रिश्ते बनाती है बेटी।
जिस घर जाए, उजाला लाती है बेटी,
बार- बार याद आती है बेटी।
बेटी की कीमत उनसे पूछो, जिनके पास नहीं है बेटी।

**- अवनी, पाँच-'अ'**

---

## " मित्रता "

मित्र वह साथी है, जो हर परिस्थिति में आपके साथ रहे, आपकी मदद करे, परेशानी हल करे, आपको सही राह दिखाए तथा गलत काम करने पर आपको रोके। मित्रता, दोस्ती पवित्र मन का मिलन होती है शायद ही कोई व्यक्ति हो जिसका कोई दोस्त ना हो, जो दोस्ती की अहमियत ना जानता हो। हम सभी की जिंदगी में कम या ज्यादा लेकिन दोस्त जरूर होते हैं। दोस्तों के साथ बिताया समय किसे नहीं अच्छा लगता खासकर बचपन की दोस्ती तो बहुत गहरी होती है जिनकी यादें सदा के लिए मन में बस जाती हैं। दोस्ती एक ऐसा रिश्ता है जिसे व्यक्ति खुद की मर्जी से चुनता है। बचपन में जाने अनजाने ही कई दोस्त बन जाते हैं जिनमें से कुछ स्कूल, कॉलेज तक ही साथ निभाते हैं तो कुछ आगे तक आपकी जिंदगी में बने रहकर अच्छे बुरे वक्त में दोस्ती निभाते हैं। दोस्त बनाते हुए हमको सतर्कता बरतनी चाहिए ।बुरी आदत वाले दोस्तों की संगत हमें हमारे भविष्य को बिगाड़ती है, वहीं अच्छी सोच वाले दोस्त हमारे व्यक्तित्व व जिंदगी को संवारने में सहायक होते हैं। आजकल बुरे और अच्छे लोगों की भीड़ में सच्चे दोस्त मिलना बहुत मुश्किल है लेकिन अगर किसी के पास सच्चे दोस्त हैं तो उसके अलावा दुनिया में कोई भी भाग्यशाली और प्रतिभाशाली नहीं है।

**- एकता पाल, आठ (अ)**

# संत रविदास जयंती

भारत की मध्ययुगीन संत परंपरा में रविदास जी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। संत रविदास, कबीर के समसामयिक थे। यह भी माना जाता है कि यह मीरा के गुरु थे। इनका जन्म वाराणसी के पास एक गांव गोवर्धनपुर में 1398 में माघ माह की पूर्णिमा के दिन हुआ था। रविवार के दिन जन्म होने के कारण इनका नाम रविदास रखा गया। इनके पिता का नाम संतोष दास तथा माता का नाम कलसा देवी था। निम्न जाति में जन्म लेने के कारण इनकी प्रारंभिक शिक्षा में अड़चने आई परंतु इनकी प्रतिभा को देखकर इन्हें पंडित शारदा नंद पाठशाला से नामांकन मिला। चर्म का कर्म इनका पैतृक व्यवसाय था एवं रविदास जी ने यह कार्य खुशी से स्वीकार किया। बचपन से ही इनका झुकाव भक्ति की ओर था । यह राम - जानकी जी की पूजा एवं सत्संगों में लीन रहा करते थे। इनका विवाह लोना नामक कन्या से हुआ था एवं इनके पुत्र का नाम विजय दास था।

**- तनीषा डिमरी, सात (स)**

# मेरा सुंदर शरदावकाश

आखिर जिसका इंतजार था वही हुआ। मेरे विद्यालय में शरदावकाश 23 दिसंबर से प्रारंभ हुए। समय से, मैंने सबसे पहले शरदावकाश में दिए गए गृह कार्य को पूर्ण किया और फिर मैं अपने पूज्य पिताजी के साथ दादा जी से मिलने गृह जनपद चला गया। वहां दादा जी के यहां खूब सुंदर समय बिताया । देसी खाना खाया, शुद्ध गौ माता का दूध पिया, धूप में बैठकर खूब विटामिन डी प्राप्त किया ।अपने उम्र के दोस्तों के साथ अपना खेत भी देखने गया जहां सरसों के फूल और मटर के फल ने मुझे रोमांचित कर दिया। हम लोग रात में लकडियां जलाकर तापते। दिन में रोज पुस्तकों को पढ़ना मैंने कभी नहीं छोड़ा। मम्मी और दीदी की यादें तो आती थी क्योंकि यह लोग मेरे साथ नहीं गए थे पर मैं मोबाइल फोन से बातें कर लेता था । मैंने आलू के परांठे और गरम-गरम जलेबी का भी मजा लिया । इस शरदावकाश में और भी बहुत मजा और मस्ती की, परंतु स्कूल वाला वो आनंद कहां। मुझे अपने दोस्त दर्श, प्रारंभ ,दिव्यांश, प्रणव, रूद्र, अरनव, अक्षत पाल की बहुत याद आ रही थी। स्कूल के सभी टीचर ,क्लासरूम की मस्ती और सुबह-सुबह स्कूल पहुंचना बार-बार याद आ रहा था। मेरी सभी मैंम भी मुझे याद आ रहीं थी। मैंने ट्रेन, बस, कार की सवारी की और साइकिल भी खूब चलाई । कुछ भी कहिए मेरा शरदावकाश बहुत अच्छा रहा। दादा जी से खूब बातें की और आते समय आशीर्वाद के रूप में मुझे उन्होंने ₹100 दिए ।जो मैंने उनका आशीर्वाद समझ कर ले लिए ।अब मैं देहरादून आ गया हूं परंतु दादा जी और गांव याद आती रहती हैं। मैं फिर गर्मी की छुट्टियों में गांव जाऊंगा और नए दोस्त बनाऊंगा।

**- शुभांग त्रिवेदी, 7 (स)**

# "राष्ट्रीय कृमि निवारण दिवस "

राष्ट्रीय कृमि निवारण दिवस भारत सरकार द्वारा हर साल 10 अगस्त और 10 फरवरी को मनाया जाता है। यह दिवस देश में कृमि संक्रमण को नियंत्रित करने और बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार करने के लिए मनाया जाता है। कृमि संक्रमण एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या है, जो दुनिया भर में लाखों लोगों को प्रभावित करती है। यह संक्रमण मुख्य रूप से मिट्टी में पाए जाने वाले कृमियों के कारण होता है, जो आंतों में प्रवेश कर जाते हैं और शरीर को नुकसान पहुंचाते हैं। भारत में कृमि संक्रमण एक बड़ी समस्या है, खासकर बच्चों में। यह संक्रमण बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास को प्रभावित कर सकता है, और उन्हें अन्य स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति अधिक संवेदनशील बना सकता है। राष्ट्रीय कृमि निवारण दिवस का मुख्य उद्देश्य देश में कृमि संक्रमण को नियंत्रित करना और बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार करना है। इस दिवस पर, सरकार और स्वास्थ्य संगठन मिलकर कृमि निवारण कार्यक्रम आयोजित करते हैं, जिसमें बच्चों को कृमि निवारण दवाएं दी जाती हैं और उन्हें कृमि संक्रमण के बारे में जागरूक किया जाता है। राष्ट्रीय कृमि निवारण दिवस के अवसर पर, हमें कृमि संक्रमण के बारे में जागरूकता फैलाने और बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार करने के लिए काम करना चाहिए। हमें अपने आसपास के बच्चों को कृमि निवारण दवाएं दिलानी चाहिए और उन्हें कृमि संक्रमण के बारे में जागरूक करना चाहिए। आइए हम सब मिलकर राष्ट्रीय कृमि निवारण दिवस के अवसर पर कृमि संक्रमण के बारे में जागरूकता फैलाने और बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार करने के लिए काम करें।

**- वान्या, सात (स)**

# कैंसर एक भयानक रोग...

कैसर एक गंभीर बीमारी है, जिसमें शरीर की कोशिकाएं असमान्य रूप से विभाजित होती हैं। यह बीमारी शरीर के किसी भी हिस्से में हो सकती है जैसे फेफड़े ,स्तन ,प्रोस्टेट और आंतें। कैंसर के कारण जैनेटिक 'परिवर्तन' ,पर्यावरणीय कारक और जीवनशैली संबंधी कारक हो सकते हैं। धूम्रपान ,अस्वास्थ्य कर आहार और शारीरिक निष्क्रियता कैंसर के खतरे को बढ़ा सकते हैं। कैंसर का उपचार कई प्रकार से हो सकता है ,जिनमें सर्जरी, कीमोथैरेपी, रेडियोथेरेपी और हार्मोन थैरेपी शामिल हैं। कैंसर से बचाव के लिए धूम्रपान न करना, स्वस्थ आहार लेना, नियमित व्यायाम करना और नियमित स्वास्थ्य जांच करवाना अत्यंत महत्वपूर्ण है ।

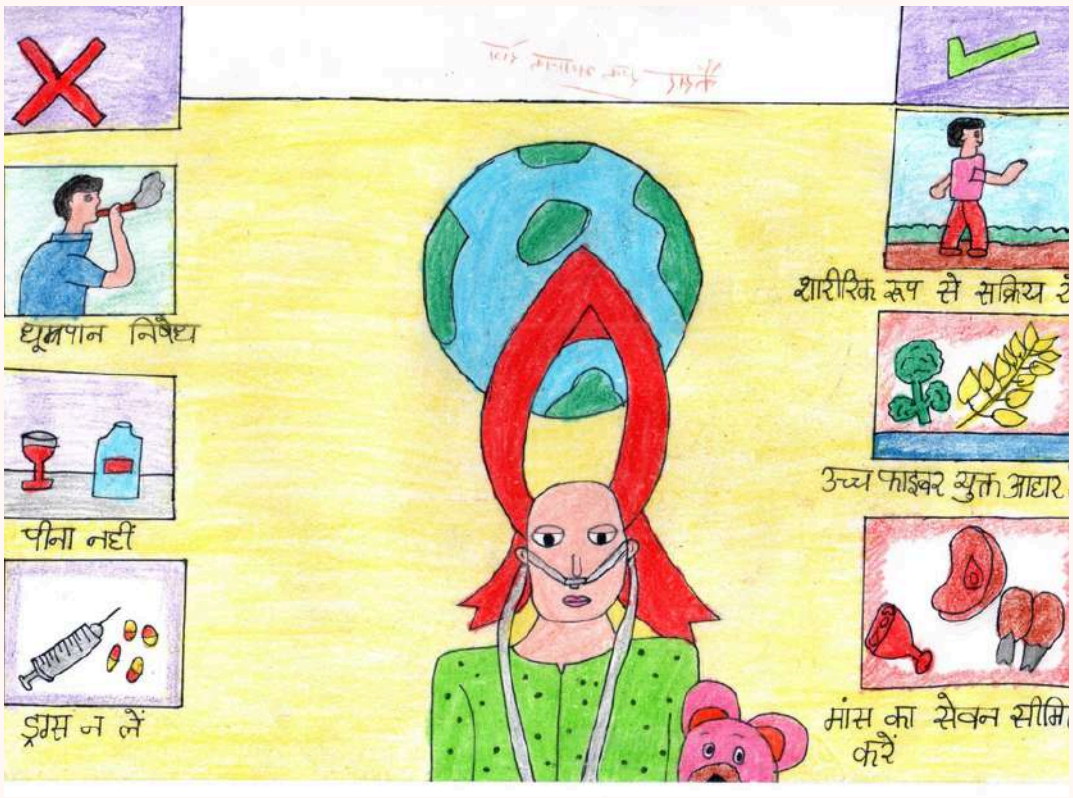


इसके अलावा कैंसर के लक्षणों को पहचानना और समय पर उपचार लेना भी बहुत जरूरी है। कैंसर के इलाज में आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने बहुत प्रगति की है। नए इलाज , विकल्पों और तकनीकों के विकास से कैंसर के मरीजों के लिए नई उम्मीदें जगी हैं। लेकिन कैंसर के इलाज में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसका जल्दी निदान किया जाए और सही इलाज किया जाय, तभी कैंसर को हराया जा सकता है।

**- खुशी, सात (स)**

# महाशिवरात्रि

महाशिवरात्रि हिंदुओं का एक बड़ा धार्मिक त्योहार है। जिसे हिंदू धर्म के प्रमुख देवता महादेव अर्थात शिवजी के विवाह के रूप में मनाया जाता है । महाशिवरात्रि का पर्व फाल्गुन मास में कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाया जाता है। इस दिन शिव भक्ति एवं शिव में श्रद्धा रखने वाले लोग व्रत उपवास रखते हैं और विशेष रूप से भगवान शिव की आराधना करते हैं। वास्तव में महाशिवरात्रि भगवान भोलेनाथ की आराधना का पर्व है जब धर्म प्रेमी महादेव की विधि विधान के साथ पूजा अर्चना करते हैं, उनसे आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। इस दिन शिव मंदिरों में बड़ी संख्या में भक्तों की भीड़ उमड़ती है। कहा जाता है कि इस दिन भगवान शिव ने तांडव नृत्य किया था जो सृजन, संरक्षण, और विनाश का ब्रह्मांडीय नृत्य है । महाशिवरात्रि एक ऐसा त्योहार है जो सभी शिव भक्तों के लिए खास है। इस दिन सब भोले बाबा की आराधना में लीन रहते हैं। इनका पूजन पूरे भारत देश में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

**- अदिति शाह, ८, पंचशीला सदन**

# मानव भारती के छात्र-छात्राओं ने जाना, कैसे होती है गन्ने की खेती

- **40 छात्र-छात्राओं ने सिमलास ग्रांट का भ्रमण करके गन्ने की खेती पर पूछे प्रश्न**
- **डोईवाला गन्ना समिति के पर्यवेक्षक और किसानों ने दिए बच्चों के प्रश्नों पर जवाब**
- **सुसवा नदी में प्रदूषण की स्थिति को जाना, नदियों तथा पर्यावरण की सुरक्षा की शपथ ली**

मानव भारती स्कूल देहरादून के छात्र-छात्राओं ने सिमलास ग्रांट में गन्ने की खेती और गन्ने से जुड़ी कई जानकारियां हासिल कीं। डोईवाला गन्ना कृषक सहकारी समिति के क्षेत्रीय पर्यवेक्षक सुनील कुमार सहित गन्ना किसानों ने छात्र-छात्राओं के खेती से जुड़े प्रश्नों के जवाब दिए।

मानव भारती स्कूल के नेचर कनेक्ट प्रोग्राम के अंतर्गत कक्षा नौ के 40 छात्र-छात्राओं ने सिमलास ग्रांट में श्रीमती कौशल्या बोरा फाउंडेशन से जुड़े किसानों से मुलाकात की।

प्रगतिशील किसान उमेद बोरा, रिटायर्ड प्रिंसिपल जितेंद्र कुमार, कैप्टन (सेवानिवृत्त) चतर बोरा, भगवान सिंह, सूबेदार (सेवानिवृत्त) राम सिंह, नरेंद्र सिंह ने छात्र-छात्राओं को दूधलीघाटी क्षेत्र में गन्ने की पैदावार, कुल क्षेत्रफल, गन्ने की प्रजातियों, गन्ना किसानों के समक्ष चुनौतियों तथा गन्ने की खेती में लागत एवं आय के बारे में विस्तार से बताया।

उन्होंने सुसवा नदी में प्रदूषण से खेती पर विपरीत प्रभाव के साथ सीमित भूमि में इंटीग्रेटेड फार्मिंग की आवश्यकता तथा इससे जुड़े लाभ की जानकारी दी।

छात्र-छात्राओं ने फील्ड विजिट किया, जहां उन्होंने किसानों को गन्ने की रोपाई करते देखा। गेहूं के खेत में गन्ने की रोपाई के लाभ जाने और मिश्रित खेती में गन्ने के साथ किन फसलों को उगाया जा सकता है, के बारे में जानकारी ली।

गन्ना किसानों ने बताया कि गन्ना किसान सहकारी समिति के माध्यम से लगभग 8000 गन्ना किसान चीनी मिल को गन्ना उपलब्ध कराते हैं। समिति ही चीनी मिल तक गन्ना पहुंचाने तथा मिल और किसानों के बीच एक सेतु की तरह काम करती है।

छात्र-छात्राओं ने सिमलास ग्रांट में मछलीपालन, मुर्गीपालन, बत्तख पालन तथा बागवानी एवं कृषि की एक दूसरे पर निर्भरता यानी इंटीग्रेटेड फार्मिंग का भी भ्रमण किया। छात्र छात्राओं ने सुसवा नदी में प्रदूषण की स्थिति को जाना और नदियों तथा आसपास के पर्यावरण की सुरक्षा की शपथ ली। यह भ्रमण शिक्षक पवन कुमार, डॉ. बबीता गुप्ता एवं विशाल रतूड़ी के निर्देशन में हुआ

# नन्हे चित्रकार

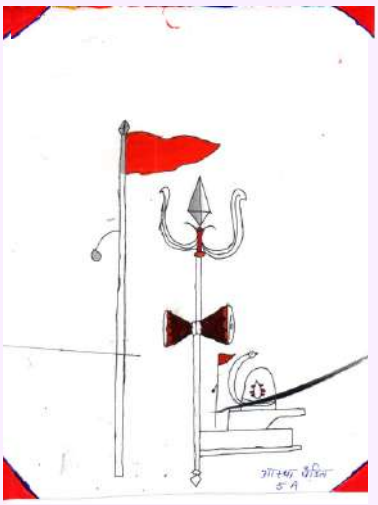

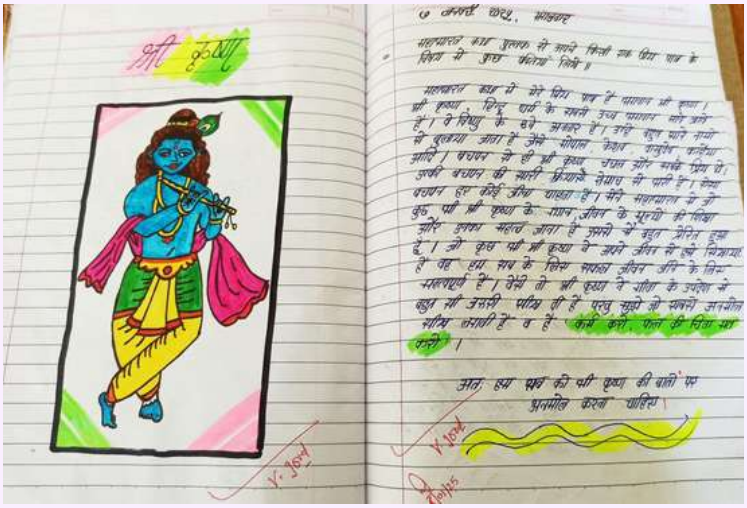

**मानव भारती इंडिया इंटरनेशनल स्कूल**
डी- ब्लाक, नेहरू कॉलोनी, देहरादून, पिन- 248001 उत्तराखंड
ईमेल:- hr@mbs.ac.in, वेबसाइट:- www.mbs.ac.in
फोन- 0135-2669306, 8171465265

**संपादक - दीपा रतूड़ी, डिजाइन - विशाल लोधा**

आत्मानं विद्धि